यूनिकोड

कंप्यूटर पर हिंदी में काम
हुआ बिलकुल आसान

यूनिकोड क्या है?

यूनिकोड का विस्तारित रूप है **यूनिवर्सल कोड**. इसके तहत प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष कोड प्रदान किया जाता है एवं उस अक्षर के संबंध में इसी कोड का इस्तेमाल सभी प्लैटफॉर्म, प्रोग्राम एवं भाषा के संबंध में किया जाता है. कम्प्यूटर, मूल रूप से, कोड की भाषा समझते हैं जो कि अंकों (0 से 9) अथवा उनके संयोजन/संमिश्रण के रूप में होते है.

इस समस्या को दूर करने के लिए यूनिकोड कन्सॉर्शियम की स्थापना हुई. इस कन्सॉर्शियम ने विश्व की अधिकांश लिपियों के लिए यूनिवर्सल कोडिंग प्रणाली अर्थात यूनिकोड तैयार किया. आज इस कन्सॉर्शियम की सदस्य अधिकांश हार्डवेयर/सॉफ्टवेयर कंपनियां हैं. ये प्रत्येक अक्षर और वर्ण के लिए एक कोड निर्धारित करके अक्षर और वर्ण संग्रहित करता है.

यूनिकोड कोडिंग के आने के पहले, ऐसे कोड देने के लिए सैंकडों कोडिंग प्रणालियां प्रचलित थीं. ये कोडिंग प्रणालियां परस्पर विरोधी थीं. दो विभिन्न अक्षरों के लिए एक ही कोड का प्रयोग अथवा समान अक्षर के लिए विभिन्न कोड का प्रयोग किया जाता था. इस कारण जब भी दो विभिन्न कोड प्रणाली अथवा प्लेटफॉर्मों के बीच डाटा भेजा जाता था तो उस डाटा के हमेशा खराब होने का जोखिम रहता था.

हिन्दी यूनिकोड

यूनिकोड के आगमन के पूर्व हिन्दी भाषा में टाइप करने के लिए अलग-अलग सॉफ्टवेयरों के हिन्दी फॉन्ट्स जैसे देवकृति, आकृति, हिन्दमिंथ आदि का प्रयोग किया जाता था, जिससे कम्प्यूटर में हिन्दी में टाइप तो हो जाता था किन्तु उस फ़ाइल को किसी दूसरे कम्प्यूटर पर खोले जाने पर फ़ाइल के फॉन्ट गारबेज के रूप में दिखाई देते थे. यह इस कारण होता था कि इन सॉफ्टवेयरों में हिन्दी अक्षरों को टाइप करने के लिए अलग अलग कोडिंग पद्धति का इस्तेमाल किया जाता था. फलस्वरूप एक सॉफ्टवेयर में तैयार की गई सामग्री को दूसरे सॉफ्टवेयर में पढ़ा या संपादित नहीं किया जा सकता था. इस समस्या से निजात पाने के लिए "कनवर्टर्स" तैयार किए गए परंतु इनके उपयोग द्वारा दिए गए फॉन्ट्स के रूपांतरण में काफी अशुद्धियां रह जाती थी. यूनिकोड के आगमन के पश्चात सभी कम्प्यूटरों में हिन्दी के मंगल एवं एरियल यूनिकोड एमएस फॉन्ट अनिवार्य रूप से उपलब्ध हो गए. फलस्वरूप यूनिकोड हिन्दी फॉन्ट में तैयार सामग्री का किसी भी प्रयोक्ता द्वारा पढ़ना एवं संपादित करना सहज एवं सरल हो गया. आज विश्व भर में हिन्दी के लिए मंगल और एरियल यूनिकोड एमएस फॉन्ट इस्तेमाल में लाए जाते हैं जिसे किसी भी कम्प्यूटर पर आसानी से टाइप किया जा सकता है एवं पढ़ा जा सकता है.

यूनिकोड इस्तेमाल करने के फायदे

यूनिकोड हिन्दी फॉन्ट के आने के पश्चात कम्प्यूटर में हिन्दी प्रयोग की समस्या का पूर्ण निदान हो गया है. अब आप यूनिकोड हिन्दी फॉन्ट का प्रयोग करते हुए कम्प्यूटर पर वे सभी कार्य कर सकते हैं जो आप अंग्रेज़ी में किया करते हैं. बस जरूरत हैं इसे अपने कम्प्यूटर/लैपटाप में इन्स्टाल करने की. इन्स्टालेशन के पश्चात निम्नलिखित कार्य हिन्दी में किए जा सकते हैं:-

- एमएस वर्ड , पावर पॉइंट, एक्सेल, दस्तावेज़ हिन्दी में तैयार करना.
- हिन्दी में ईमेल भेजना.
- हिन्दी में वेबसाइट तैयार करना. वेबसाइट देखने के लिए फॉन्ट डाउनलोड करने की आवश्यकता नहीं.
- फ़ाइलों के नाम हिन्दी में देना.

यूनिकोड का कंप्यूटर में इन्स्टालेशन

- इंटरनेट पर www.bhashaindia.com/ilit साइट पर जाएं.
- भाषा विकल्प में हिन्दी भाषा का चयन करें.
- **Install Desktop Version** पर क्लिक करें.
- **Install now** पर क्लिक करें.
- **Run** पर क्लिक करें
- शर्तों को स्वीकार करते हुए इसे **Install** करें.
- आपके कम्प्यूटर पर माइक्रोसॉफ़्ट इंडिक भाषा इनपुट टूल इन्स्टाल हो जाएगा.

इन्स्टालेशन संबंधी स्क्रीनशॉट्स

स्क्रीन I

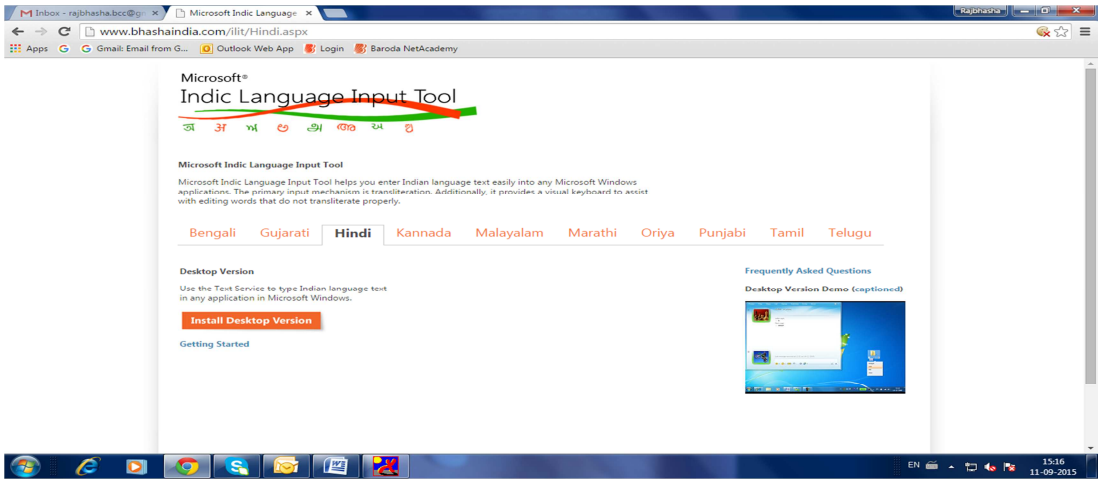

स्क्रीन II

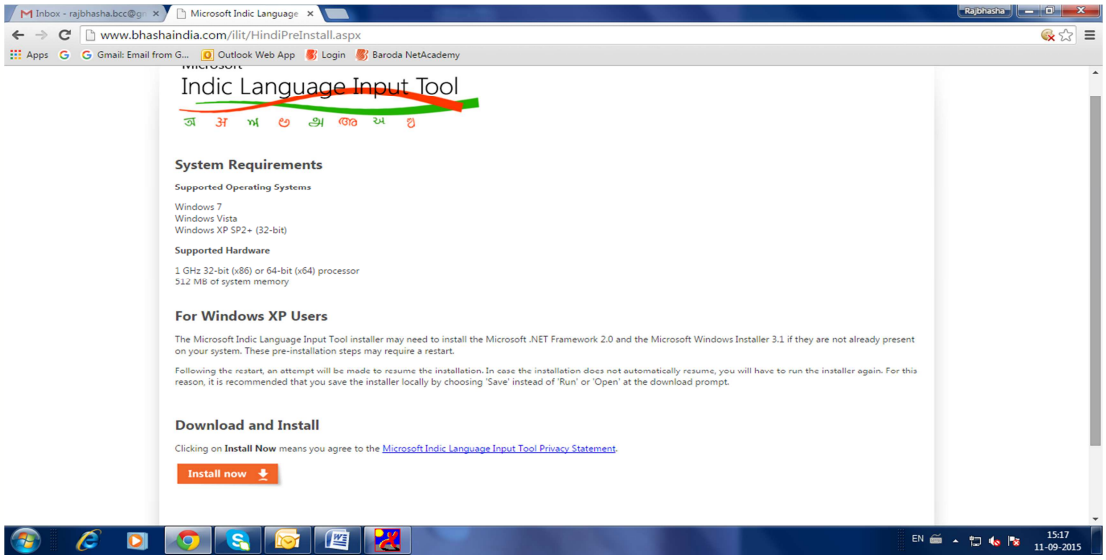

स्क्रीन III

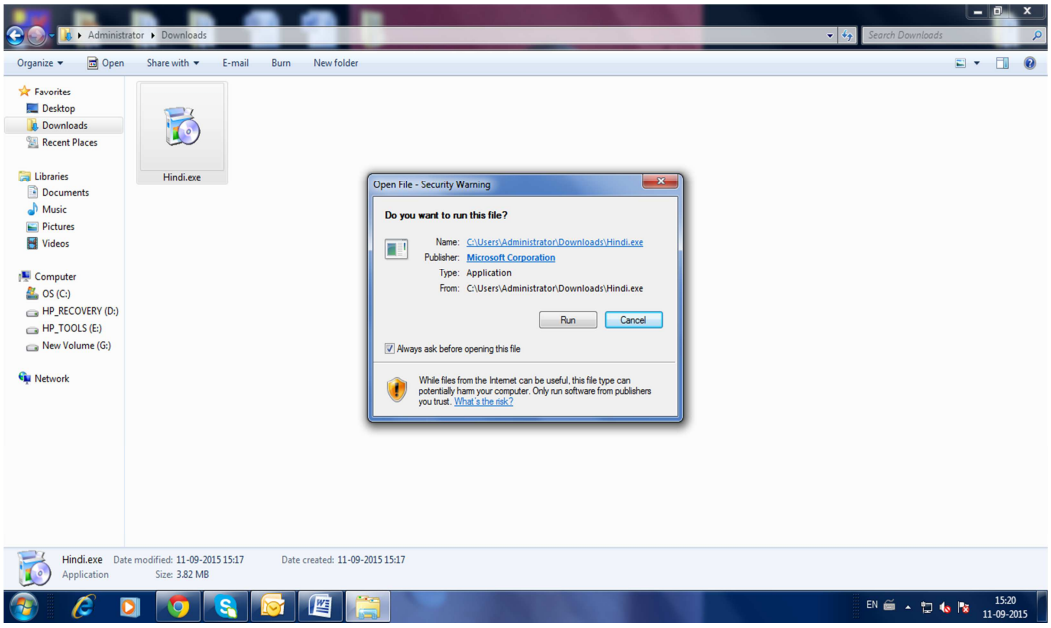

स्क्रीन IV

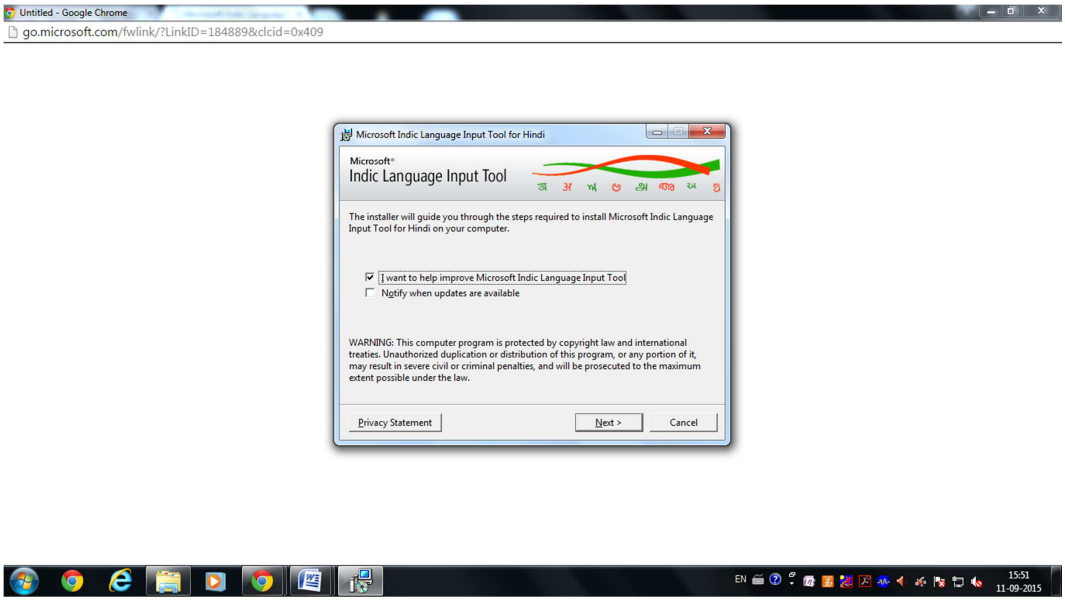

स्क्रीन V

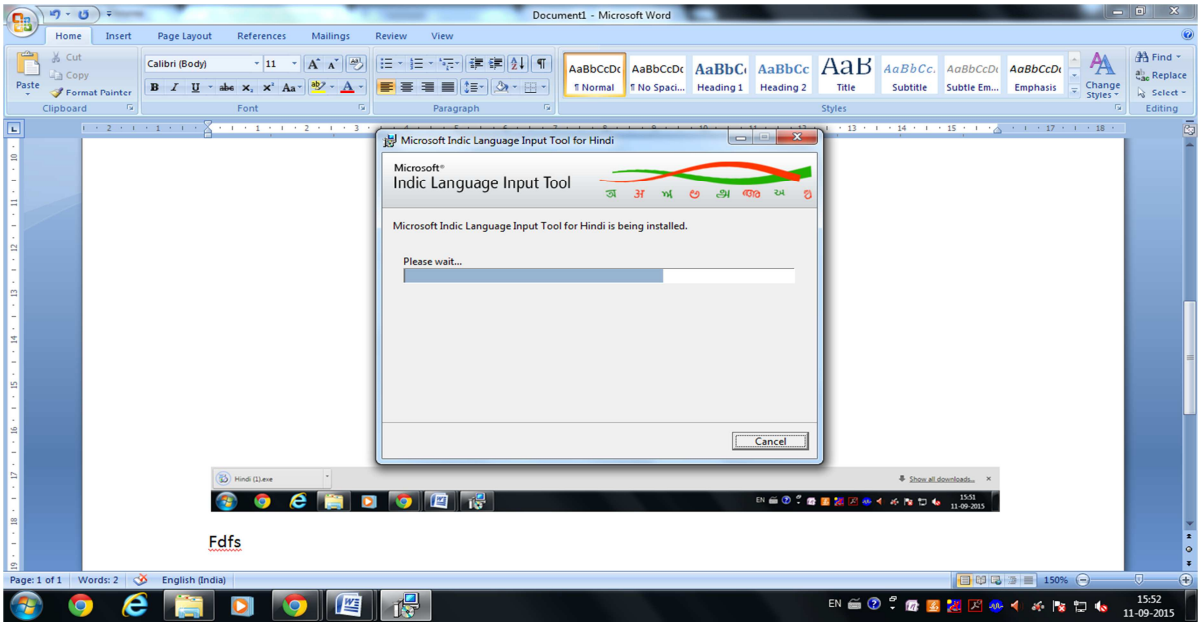

स्क्रीन VI

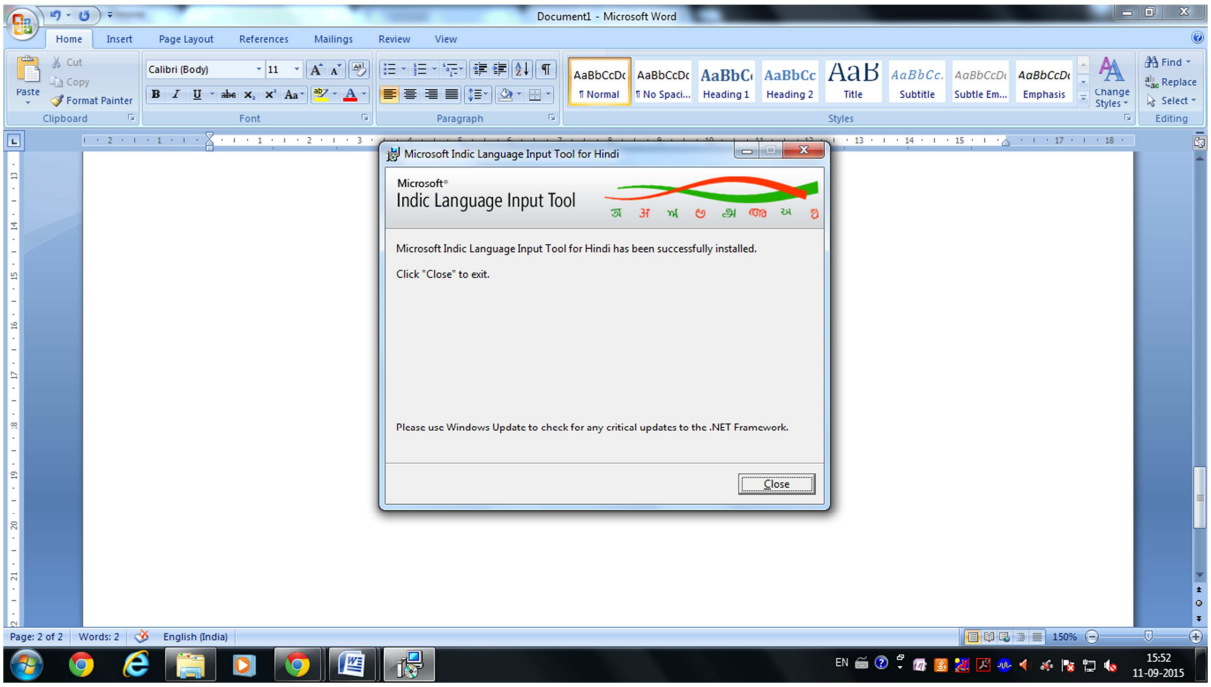

कीबोर्ड द्वारा टाईपिंग

- नया वर्ड डॉक्यूमेंट खोलें→स्क्रीन के बॉटम ट्रे में दायीं ओर EN (English) चिह्न होगा, उस पर क्लिक करके HI (Hindi) को चुनें → (HI को चुनते ही की-बोर्ड ड्राइवर क्रियान्वित हो जाएगा) एरियल यूनिकोड एमएस या मंगल फॉन्ट में हिंदी टाइपिंग शुरू करें .

- अंग्रेजी में टाइप करना हो तो बॉटम ट्रे में HI पर क्लिक करें और EN को चुनें या Alt और Shift को एक बार दबाएं. पुन: हिंदी में टाइप करने के लिए वही पद्धति अपनाएं.

- हिन्दी में टाइपिंग हेतु ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) पद्धति का इस्तेमाल करें अर्थात आप जैसे बोलते हैं उसी तरह उसे अंग्रेज़ी में टाइप करें. जैसे कि mujhe karyalay ka kaam hindi mein karna hai (मुझे कार्यालय का काम हिन्दी में करना है).

- आपके कम्प्यूटर पर इन्स्टाल हुआ माइक्रोसॉफ़्ट इंडिक भाषा इनपुट टूल आपके द्वारा टाइप किए जाने वाले प्रत्येक शब्द हेतु उस शब्द से मिलते जुलते पांच सुझाव देता है. 99% मामलों में आपके द्वारा ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) रूप में टाइप करने पर हिन्दी में शब्द सही रूप में आते है; यदि ये गलत आ रहें हों तो आप पांच विकल्पों में से एक का चयन कर सकते हैं.

फोनेटिक की बोर्ड द्वारा हिन्दी में टाइपिंग

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
a	aa	i	ee	u	oo	e	ai	o	au	an	a:
मात्रा											
क	का	की	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	क:
k	ka	ki	kee	ku	koo	ke	kai	ko	kau	kan	k:

व्यंजन

क	ख	ग	घ	
K	Kh	g	gh	
च	छ	ज	झ	
ch	chh	j	jh	
ट	ठ	ड	ढ	ण
T	Th	D	Dh	N
त	थ	द	ध	न
t	th	d	dh	n
प	फ	ब	भ	म
p	ph	b	bh	m
य	र	ल	व	श
y	r	l	v	sh
ष	स	ह	क्ष	ज्ञ
Sh	s	h	ksh	gy
		त्र		
		tr		

फोनेटिक की बोर्ड द्वारा हिन्दी में टाइपिंग का अभ्यास

anchal	अंचल	vishishth	विशिष्ट
anya	अन्य	karyanvyan	कार्यान्वयन
badauda	बड़ौदा	chutti	छुट्टी
chhaatra	छात्र	uchchhrankhal	उच्छृंखल
chaand	चाँद	rin	ऋण
grahak	ग्राहक	udyam	उद्यम
kshetr	क्षेत्र	praudyogiki	प्रौद्योगिकी
sugandh	सुगंध	arthvyavstha	अर्थव्यवस्था
gunvatta	गुणवत्ता	sikka	सिक्का
prayokta	प्रयोक्ता	arpan	अर्पण
meeyadi	मीयादी	traimasik	त्रैमासिक
prapt	प्राप्त	sashart	सशर्त
pratilekhan	प्रतिलेखन	sthir	स्थिर
utpad	उत्पाद	nivarak	निवारक
policy	पॉलिसी	insurance	इन्शुरेंस
dishanirdesh	दिशानिर्देश	rajsv	राजस्व
pramukh	प्रमुख	aprachalit	अप्रचलित
vinapaani	वीणापाणि	bahubhashi	बहुभाषी
karmik	कार्मिक	vinirmaan	विनिर्माण
sarvekshan	सर्वेक्षण	seemant	सीमांत
sheyar	शेयर	samashodhan	समाशोधन
swamitv	स्वामित्व	mainyual	मैन्युअल
alpadhikaar	अल्पाधिकार	main	मैं

madhyam	माध्यम	pratispardha	प्रतिस्पर्धा
mulyankan	मूल्यांकन	aastiyan	आस्तियां
aamantrit	आमंत्रित	nishkriya	निष्क्रिय
vaanijyik	वाणिज्यिक	sakshya	साक्ष्य
sampatti	संपत्ति	panjikaran	पंजीकरण
prastavit	प्रस्तावित	saapeksh	सापेक्ष
punarnivesh	पुनर्निवेश	sansadhan	संसाधन
samiksha	समीक्षा	sanyukt	संयुक्त
paatra	पात्र	dhyanpurvak	ध्यानपूर्वक

अभ्यास करें

निम्न शब्दों को टाइप करें

जन्मदिन	पर्याप्त	मध्यस्थ	अनुवीक्षण
समर्थित	श्रेणी	संपरिवर्तन	अधिमूल्यित
प्लेटफॉर्म	बेईमान	दायित्व	अंतरणीय
लॉगिन	पद्धति	संप्रवर्तक	आयुक्त
वाणिज्यिक	उच्चाधिकार	अंतर्राष्ट्रीय	घृत
प्रत्यक्ष	क्षेत्र	स्तर	शब्दावली
प्रयोक्ता	श्रमिक	रूपांतरण	निकटस्थ
तैयार	निर्यात	सॉफ्टवेयर	स्वैच्छिक
फलस्वरूप	प्रयोक्ता	पारदर्शिता	सीमांत
महत्वपूर्ण	वैयक्तिक	सर्वेक्षण	अग्रेषण

निम्नलिखित पैराग्राफ टाइप करें

1. बैंक की मोबाइल बैंकिंग (बड़ौदा एम-कनेक्ट) सेवा की शुरुआत वर्ष 2011 में हुई थी तथा इसके आसान प्रयोग, ग्राहकोन्मुखी विशेषताएं और सुरक्षा उपायों के कारण यह ग्राहकों के लिए धीरे-धीरे पसंदीदा बैंकिंग चैनल बनता जा रहा है. आइकॉन आधारित इंटरफेस की शुरुआत के बाद एम-कनेक्ट को अच्छी गति मिली है. (परिपत्रांक बीसीसी:बीआर:107:57 दिनांक 04 फरवरी 2015 का संदर्भ लें). वर्तमान में, एम-कनेक्ट के 25 लाख से अधिक ग्राहक हैं तथा इसके जरिए प्रतिदिन 49,000 से अधिक लेन-देन किए जाते हैं. हमारी मोबाइल बैंकिंग पंजीयन की सुविधा एटीएम तथा शाखा (फिनेकल मेनू विकल्प) के माध्यम से उपलब्ध है.

2. हम आपको सहर्ष सूचित करते हैं कि हमारे कार्यपालक निदेशक ने ग्राहकों से सहमति पत्र के साथ आधार नंबर को एकत्र करने और संबंधित लिंक शाखा को आधार दर्ज करने के लिए प्रस्तुत करने हेतु प्रति ग्राहक की दर से रु. 2/- की प्रोत्साहन राशि अनुमोदित की है. यह प्रोत्साहन योजना 30 जून, 2015 तक वैध रहेगी. आपको जानकारी होगी कि हम 10 अप्रैल से 10 मई तक प्रधान मंत्री जन धन योजना अभियान का आयोजन कर रहे हैं जिसका लक्ष्य 75% बचत बैंक खातों में आधार दर्ज करना है. इस उद्देश्य को आसानी से पूरा करने के लिए हमे अपने साथ काम करने वाले व्यवसाय प्रतिनिधियों को पूरी सहायता प्रदान करनी होगी. यह प्रोत्साहन योजना निश्चित रुप से हमारे व्यवसाय प्रतिनिधियों को अपने लक्ष्यों को पूरा करने एवं इस हेतु अतिरिक्त समय देने की दिशा में उत्प्रेरक एवं प्रोत्साहन के रुप में कार्य करेगी.

3. दोनों मामलों के बीच अनुरूपता सुनिश्चित करने के लिए , वर्तमान घरेलू ऋण नीति -2014 में, विनियामक और गैर-विनियामक अनुभागों के द्वारा मूल्यांकन की पद्धति में संशोधन किया गया. इसके अतिरिक्त, बैंक ने 'नायक समिति' की अनुशंसा को भी अपनाया. तदनुसार, घरेलू ऋण नीति 2014 में, मूल्यांकन उद्देश्य के लिए उपरोक्त के आधार पर विभेद किया गया. गैर-विनियामक अनुभाग के अंर्तगत आने वाली इकाइयों के संदर्भ में, ऋण देने की दूसरी पद्धति को अपनाने की आवश्यकता है. विनियामक के अंतर्गत आने वाली इकाइयों के संबंध में, 'टर्नओवर पद्धति' या 'ऋण देने की पहली पद्धति', इसमें से जो अधिक हो, के आधार पर कार्यशील पूंजी का निर्धारण किया जाना चाहिए. ऋण सीमा की मात्रा मूल्यांकन के लिए मापदण्ड नहीं है लेकिन यह वित्तपोषण किए जा रहे अग्रिम का हिस्सा है.

4. हम आपको सूचित करते हैं कि माननीय प्रधानमंत्री ने 8 अप्रैल, 2015 को **'फंड द अनफंडेड** (जरुरतमंदों को ऋण)' के उद्देश्य के साथ **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (पीएमएमवाई)** का शुभारंभ किया है जो ऐसे उद्यमों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली में लाने और उन्हें वहन योग्य लागत पर ऋण उपलब्ध कराने का कार्य करेगा. एनएसएसओ (राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन) के अनुमानों के अनुसार लगभग 5.77 करोड़ लघु एवं अति लघु इकाइयां देश में विद्यमान है और ये विनिर्माण, व्यापार एवं सेवा क्षेत्र में कार्य कर रही हैं. इनमें से अधिकांश औपचारिक बैंकिंग से बाहर हैं और वित्त की कमी अथवा अनौपचारिक चैनल जो कि काफी मंहगे एवं अविश्वसनीय होते हैं, पर निर्भर होने के कारण अपना अस्तित्व बनाए रखने अथवा वृद्धि दर्ज करने में सफल नहीं हो पर रहे हैं. उक्त मसले के समाधान के लिए हमारे प्रधानमंत्री ने एक विशेषीकृत एजेंसी माइक्रो यूनिट विकास एवं पुनर्वित एजेंसी (मुद्रा) लि. का दिनांक 08 अप्रैल 2015 को शुभारंभ किया है एवं उसी दिन उक्त पीएमएमवाई योजना के शुरुआत की भी घोषणा की है. आप जानते हैं कि बैंकिंग क्षेत्र जिसमें वाणिज्यिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एवं सहकारी बैंक शामिल हैं, इस क्षेत्र को ऋण उपलब्ध

कराने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं. औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से वर्तमान में वंचित ऐसी इकाइयों की बड़ी संख्या तक पहुंच बनाने के कार्य की कठिनाई को ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र को वित्त उपलब्ध कराने के कार्य को अभियान के तौर पर पूरा किया जाना चाहिए.

5. वित्त मंत्रालय ने बैंक को सूचित किया है कि बैंक की वेबसाइट के साथ-साथ एसएलबीसी की वेबसाइट पर व्यवसाय प्रतिनिधियों के विवरण अपलोड करें. इस संबंध में बैंक ने एक यूआरएल आधारित डाटा प्रविष्टि प्रक्रिया तैयार की है जिसके माध्यम से बीसी के विवरण प्राप्त किए जाएंगे और स्वतः ही वेबसाइट पर अद्यतन किए जाएंगे. शाखाओं को यूआरएल URL http://172.16.51.70/bc_info_capture को सीबीएस पीसी पर एक्सेस करना होगा और अपनी शाखाओं से लिंक बीसी के विवरण को प्रविष्ट करने हेतु अपने सीबीएस डोमेन आईडी और पासवर्ड का प्रयोग करते हुए पोर्टल पर लॉग इन करना होगा. हमें आशा है कि सभी शाखाओं के पास उनके अधिकार क्षेत्र के तहत कार्यरत बीसी के विवरण उपलब्ध होंगे. अन्यथा, वह संबंधित बीसी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और पोर्टल पर प्रविष्ट कर सकते हैं.